

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

वा भुभिन प्रेध विस्वरमः भुभिन भुभु
 मरिधुनेभि भुभुने रुद्रभुतिद्वय उ॥१॥
 पधमस भक्त पौमिभउर सुठ युवने
 विमषेधु रगमयः सगिगिदु भनवभु
 ममभे विस्वभा मव सवभा गभविदु उ॥३॥
 मउभिनु मग्ने सत्रिमेय यडन सुत्र र
 गभउत्तनभा पुडभे यड धिउठेवति भ
 नेमपु गीरिधउ युनतेः ॥५॥ तिपुके
 मये गीगिदि पुग्ने रगभुय भुय य
 विधु हे मसुत उपयति वरः ॥१॥ सुडुठ
 य कवय रुद्रय रमेठि रुद्रभुय भिमभ
 ना यउठय भुठयउने मसु गु मवना भ
 ठिदु उष्टु गमगिंवेमव भुपिठिभरुध

३८५५५५
 में नस्ती हमले
 ३८५५५५

यल्लिधुमुत भपुने रुध सुम यिभट्टुष
 निपुविनुत वउपुमुत यउतत्र पयकः ॥ १ ॥
 यउपुतीके यउपु सुमपि यउत रुवने
 यउमभुपाम यउपुधे रुगित भुय
 रुतु यउभिच वृत्तत रुवमवने ॥ ३ ॥
 उभसग्रे वीउतम निरुष्ट एभेवयि
 यवत उभसु पुतिनं भुगी लिष्टुनु ॥ ० ॥
 भपुउसग्रे भभिः भपुलिङ्गः भपुसु
 यः भपुपाम भिय लि भपुद्व सववि
 सुचपुयेनीर भुमभु यउतन ॥ १ ॥ इयधि
 मउनुवेय भिउतत्र उभेयुसं भमयेय
 नुउधं किं पुतिममेयपइभुद यं
 युल्लमपु इमेवना ॥ ३ ॥ यन्मभानभसि

मं यस्मिन् यस्मिन् भक्तः सत्यं चैव कुरु भक्त
 भक्तं प्रियं उरः पमः ॥ १ ॥ विष्णु कर्मदा वि
 निम्नं लक्षणः भक्तने दल्लभमि भक्तने
 इयं वृष्टा उपमया सुनिभूमः उः भ
 क्तप इरुविधा ध्यते ॥ ५ ॥ युनयसी च
 न भुक्ति गंक्ति गंक्ति उवैः पात्रि
 वैप उ वयत्र गंक्ति गंक्ति उवैः पात्रि
 रिमपै उ भदन गंक्ति गंक्ति उवैः पात्रि
 वृः पा उ विष्णु गंक्ति गंक्ति उवैः पात्रि
 सुपा उ प्रिरुगठि प्रेध सुगा कर भु
 उभयल्लभवत्तु उभयवत्तु नव सुगठन
 भारुठ सुभा ॥ १ ॥ २० ॥ पावि विष्णु चरि
 मिनीय ल्लवत्तु सुमिडेन भक्तु वृवै विवत्तु ॥ ० ॥

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

सुमयेमीशिवंभ, भपात्रपातं, धरितुमुत्तुपः०
 सुभेदिष्टा भयेद्रवभुन कुल्लेयपातन भद्रे
 ७७ यममामे०० येवाम्भिवतमेम भुष्टुठ
 एयउदनः उमतीरिवभउरः००० उभु
 मरुभभवे यभुमया यमिन्नभ सुभे
 एन यध मनः०७ भवे सुध एन येभु
 भगठ भवे मिसुचयतिउं रिदुनि०७ भ
 मपात्रपातुल्लयनभुन चमुपयायवि
 एउ विठुति०५ उद गव भूययपु मि
 दमु उद पुदधः उदभदभूमि निग
 यभुध भूययउभा०५ मयंयुष्टुवच
 उदुठिगुमि गियं वि भुपडुभुवीर
 उमभुदि गतिव दी धुष्टुम यम्विसेमव

धुभु
 ७

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 पाति भेद भक्तुद ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 भुव चक्षुषा विष्ट ॥ उपभुङ्क्ते ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 सुदुःखी ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्री कल्याणाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 भुङ्क्ते भुङ्क्ते भुङ्क्ते ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कु मी वीत भित्तु भगवतः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 तु मे विदुः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 भुङ्क्ते भुङ्क्ते भुङ्क्ते ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 भुङ्क्ते भुङ्क्ते भुङ्क्ते ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 भुङ्क्ते भुङ्क्ते भुङ्क्ते ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

9

हुतेयं यस्मिन् संप्रदत्तं नो ॥ १ ॥ मधुद्रि
 मधुमयं मधु नमसिधं मसिनं पंम
 वारं पूजितं निधने भन मुकुट पिभु
 कमेव दधि मिमं धनुः ॥ १ ॥ २० ॥ सु
 द्वायल्लभं मधु ॥ १ ॥ पयउधतः ॥ ५
 दुनिधति कः ॥ ० ॥ गेधः उन्नतधम
 मुसुमावराभा ॥ ३ ॥ सुद्वयल्लभं प्रभुः
 सुद्वयल्लभं ॥ ३ ॥ ५ ॥ उभाय उतभुय
 निगमउविषयउ भमीगीनः भुमनवः
 धी ॥ ३ ॥ उन्नतगदितमवमदति पयः ॥ ३ ॥
 यलः ॥ १ ॥ मव मवधुमयतं पूषमः सि
 उयधमयतं मितीय भुतीयधमय
 तं यमुद्रय एक मम इयसु इंसु

इयम् शीम मत् इयम् शीम भद्रम् ३३३
 यत्नमवत् उमा भवत्तव सुगठव भद्रम्
 भा० ७॥ १॥ वभवत्तु मयत्तु रुद्रम्
 दयत्तु सुमिष्टं सुयत्तु विमिष्टं यवत्तु
 दत्त० १॥ पूवत्तु पूवत्तु धाविवा पूवत्तु
 भवत्तु ३३३ पूवत्तु विमिष्टं मयत्तु ३३३
 वदत्तु ३३३ पूवत्तु यत्नमवत्तु पयत्तु
 वः मिविष्टं दत्तु उरिष्टं विमिष्टं
 दत्तु ३३३ सुदत्तु दत्तु मयत्तु पूवत्तु वि
 यत्तु सुनत्तु विमिष्टं मयत्तु वत्तु मयत्तु
 इत्तु मयत्तु मयत्तु ३३३ पूवत्तु दत्तु
 धादत्तु यवत्तु मयत्तु मयत्तु यवत्तु
 दत्तु वली विमिष्टं दत्तु सुगम् ५॥

पूवत्तु
 ५

11

यत्तः॥ धादमिव सुप्र यत्त धाद उरिष्टा
 मप्र यत्त धाद पाषिष्टा सुप्र यत्त यत्त
 मभिपूव यत्त पदि यत्त मभिपूव यत्त
 मपदि उत्रप मभिपूव उत्र मपदि यत्त धा
 मभिपूव यत्त मपदि यत्त मभिपूव
 मपदि ॥॥ मपदि यत्त मपदि यत्त
 धाद मपदि मपदि यत्त विमम उत्र यत्त
 विमम यत्त मपदि यत्त मपदि यत्त
 उत्र यत्त मपदि यत्त मपदि यत्त
 लता उत्र यत्त मपदि यत्त मपदि यत्त
 यत्त मपदि मपदि यत्त मपदि यत्त
 उत्र मपदि यत्त मपदि यत्त मपदि यत्त
 पूव यत्त पूव पाषिष्टा पूव मपदि यत्त

५५५.

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

५५.

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

ममीलीतं भद्रसुद मन्मथसुमीलीतं म
 नसुद प्रलभमसुमीलीतं वृद्धसुद सु
 इल्लमीलीतं भक्तसुद सुभयसुमीली
 तं मीतं मीतं मित्रमित्रमवगं भुभु
 उतुव उदियावत उतुपीतु भवगल
 भुवगल भु भुज उभुज उभुज उभुज
 ०० ३१ विष्णु सुगुहय वयं गगं गग
 नु उव सगिगदे भदिमिधः ॥०॥ यद
 वृष्टकमुपमा भपमुभामुपममि ॥
 उभेगानरुविध विपम इभयवम लभु
 यव ममि ॥१॥ सुदुल्लय कवयवमय
 उभेगानरु कमुपय भिमंभन यउठयम
 ठयउने सुमु प्रयव न भवदेनु उम ॥॥

भुभु
 उ

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

ममिड विउ जिधुत्त भङ्गासयामः ॥ येन
 भुवट्टे सठिगाममयु येसुत्तरे मिडुभरिस
 वधुत्त उमएगठि चपठिसुवधु भुप
 जिपिधु उभसुत्तपधुना ॥ १ ॥ भभुभुल्लेड
 कउभा ननुत्तिसिधुगसुभउ पावकेयसुनय
 जी नुभुभि नाहुएवः ॥ ३ ॥ नदिउ समुत्त
 ववुग्भनभभउः कपिठठमिउगनं
 भुएवयगोवि ॥ ७ ॥ भधुवयसुपम वि
 यमचडि यमधुगुरुपगमु ॥ यमउति ॥ ० ॥
 मीधु मीरेवमभ वसाएवय वंसुठठ
 भिरुगिउठिगमठिः ॥ ०० ॥ भपलवय भु
 उभसुवगपरे कधु उधिर सुनउति धः ॥ ३ ॥
 मियवुपगमु निधुत्त भुगुत्तमेमि भदमिउः ॥ ०५ ॥ ५३ ॥

19

विष्णुः॥ सप्रिना उपेव ठव पुदे लउरि वय
 नः पू लउ पुकेन मय यमने पिउर भुग सुह
 भव पु भु पु पु मेन भुम वाम मयन भुम नि
 गाय ड कन मि म पु पु पा लि कि लून
 वम मि जिगि र रिन भय मरग रि ल
 भु पु सुनेम पउ डि लि सु पु लः भमव
 भु पे लन वयं भु सु पु न वने भु जय उर
 नेन न नियवने धय सु व म ल कमरु
 पे सु वे वु म ठन गये व भु नि यये भु
 नर म कु म भान म ड लि व ड लन व
 मे व म मे य ड भु य वि ग ड ड प च ड
 भु म क ल पे मि भु ड भु ड न उ भु ड न उ य
 भु प म पर मे डी पर मे धि न भु ड भु ड
 नः पू ल

[illegible]

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

ॐ

५५.
०९

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

CC-0. Courtesy Sanjay Raina, Jammu. Digitized by eGangotri

५५.
०३

27

भुवः समुद्रादुपलभ्यते पुत्रिषु भद्रमस्तु ॥ यस्तुः ॥
 वयं भगवन्तु धर्मवर्षा मिषनं वत्स पमवस्तु भद्रं
 वैभवं विभक्तुं भुवः भिषना विप्रमं पुत्र्यत्तु उमत्तु
 रपत्तु स्वामपत्तु पुत्र विभक्तुं ममत्तु भिषना
 ध्यत्तु विप्रमं पुत्र्यत्तु ॥ इत्येभि ॥ वत्स पुत्रिवा
 निरुवीधुः प्रिनावा मनी कने मयत्तु भद्रं मनः
 भविष्यत्तु भगवन्तु मयत्तु प्रधायीदे गवतिष्ठति
 रिषि देवैर्गति रुवीधुः ॥ इति ध्यायि मित्तु न कर्म भद्रम् ॥ ॥ ॥
 ति ध्यायि मित्तु पर्वत्तु वै भद्रं मयत्तु भानवः समुमेय भ
 रुमत्तु रुत्तु भवत्तु भद्रम् रुत्तु वै भद्रं भद्रं
 रुत्तु भिद्रि कर्म भद्रं निद्रं पविनि मित्तु रुत्तु कर्म
 रुत्तु मयत्तु रुत्तु मयत्तु निद्रं भिद्रि कर्म भद्रं
 गमना रुत्तु भद्रं यत्ति पर्वत्तु भद्रम् ॥ ॥ ॥ मनेन भद्रं
 पर्वत्तु रुत्तु मनेन रुत्तु विप्रं ध्यायि मित्तु निद्रं मति
 रुत्तु मनेन निवर्त्तु रुत्तु रुत्तु भद्रं पर्वत्तु
 रुत्तु ॥ ॥ ॥ रुत्तु रुत्तु रुत्तु ॥ रुत्तु भुवः ॥

०५